मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 66400/97

'हूडा' में भ्रष्टाचार का धंधा 3
निगम की बैठक में गंदा पानी पहुंचा 4
खिलाड़ियों की पीठ पर सवार खट्टर सरकार 5
लाट साहबी सुरक्षा में एक और बलि 6
मैक्सिकन माफिया के शिकंजे में ग्रेटर फ़रीदाबाद 8

वर्ष 34 | अंक 34 | फरीदाबाद | 4-10 जुलाई 2021 | फोन-8851091460 | 3.00 ₹

बतौर सीपीएस सीमा त्रिखा ने अपने लोगों पर लुटाया था सरकारी खजाना

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: हरियाणा में नेता मंत्री बनने के बाद जरूरतमंदों को सरकारी खजाने से आर्थिक मदद करते रहे हैं, लेकिन कई ऐसे भी नेता और मंत्री हैं जो भरे हुए लोगों का पेट सरकारी खजाने से भरते हैं। दस्तावेज बताते हैं कि भाजपा विधायक सीमा त्रिखा कुछ दिनों के लिए जब मुख्य संसदीय सचिव (सीपीएस) बनी थीं तो आर्थिक मदद देने के नाम पर सरकारी खजाना जी भरकर लुटाया। कई सारी मदद ऐसी भी हैं, जिनका सार्वजनिक मंचों से ऐलान नहीं किया गया, बल्कि उनके दफ्तर से लेटर टाइप करके सीधे ग्रांट जारी कर दी गई। यह मदद ऐसे लोगों तक पहुंची जो इसके हकदार ही नहीं थे। आमतौर पर यह सरकारी ग्रांट उन्हीं लोगों को मिली जो सीमा त्रिखा और उनके पति के निकटवर्ती लोग थे, वे आज भी सीमा के साथ हैं यानी सरकारी ग्रांट अपना असर दिखा रही है। हालांकि यह जनता के टैक्स का पैसा है। इसे इस तरह किसी विधायक, मंत्री को लुटाने की इजाजत नहीं है। लेकिन इसके पीछे जो नीयत है, वो आसानी से समझी जा सकती है। यह पड़ताल थोड़ी लंबी है, इसलिए आपको धैर्यपूर्वक पढ़ना पड़ेगा।

पीए को गरीब बता कर मदद

जब कोई मंत्री बनता है तो उसे अपने स्टाफ में पीए रखने की छूट होती है। उस

स्टाफ का वेतन हरियाणा सरकार देती है लेकिन स्टाफ चुनने की छूट मंत्री को होती है। मुख्य संसदीय सचिव पद भी मंत्री के बराबर ही अहमियत रखता है। सीमा जब सीपीएस बनीं तो उन्होंने हरिन्दर शर्मा को अपना पीए चुना और सरकार से उनका वेतन 40 हजार रुपये तय हुआ। दस्तावेज बताते हैं कि इन्हीं हरिन्दर शर्मा को सीमा ने 17 जुलाई 2017 को डेढ़ लाख रुपये की मदद सरकारी खजाने से की। जिसमें कारण लिखा गया कि हरिन्दर शर्मा गरीब हैं और इनको अपने घर की मरम्मत करानी है। यहां तक तो मामला गनीमत है। कौन नेता अपने पीए का ध्यान नहीं रखता,

हरिन्दर शर्मा

संदीप शर्मा

एडवोकेट प्रवीण त्यागी

मोहनलाल अरोड़ा

क्योंकि वो नेता के हर राज जानता है।

...लेकिन गजब तब हुआ जब एक दस्तावेज यह सामने आया कि हरिन्दर शर्मा के भाई संदीप शर्मा को भी डेढ़ लाख रुपये की मदद उसी 17 जुलाई 2017 को सीमा त्रिखा ने की। संदीप शर्मा के साथ भी सरकार को कारण यही लिखा गया कि संदीप शर्मा गरीब हैं और उन्हें मकान की मरम्मत के लिए यह राशि सरकार की ओर से दी जा रही है। अब देखिए 1K/65 हरिन्दर शर्मा और संदीप शर्मा का घर है। दोनों भाई एक ही तारीख में एक ही घर की मरम्मत के लिए पैसा प्राप्त कर रहे थे, क्योंकि वे गरीब हैं।

हरिन्दर शर्मा और संदीप शर्मा आज भी सीमा त्रिखा से जुड़े हुए हैं और उनके हर काम में आगे-आगे रहते हैं। इसमें कोई बुराई भी नहीं है। लेकिन ऐसे लोगों का समूह जब किसी गिरोह या गैंग का रूप ले लेता है तो शहर की दिक्कतें बढ़ जाती हैं।

ऐसे और भी नाम हैं जिन्हें गरीब बताकर और उनके मकान की मरम्मत के नाम पर पैसे दिए गए। हालांकि उनके अपने शानदार मकान और गाड़ियां हैं लेकिन सीमा त्रिखा ने उन्हें जिन्दा गरीब बना डाला।

पति का भी रखा ख्याल

सीमा त्रिखा के पति अश्विनी त्रिखा वकील हैं। अश्विनी त्रिखा के साथ प्रैक्टिस करने वाले उनके सहायक वकील प्रवीण त्यागी को 17 जुलाई 2017 को डेढ़ लाख की मदद सरकारी खजाने से की गई। प्रवीण त्यागी की आर्थिक स्थिति ठीकठाक है लेकिन उन्हें गरीब बताते हुए और मकान की मरम्मत के लिए ये पैसा हरियाणा सरकार की ओर से दिया गया। कोर्ट में अश्विनी त्रिखा और प्रवीण त्यागी के मददगार सुरेश कुमार जिन्हें वहां की भाषा में मुंशी कहा जाता है, सुरेश कुमार को भी डेढ़ लाख रुपये की मदद हरियाणा सरकार की ओर से दी गई। इन्हें भी गरीब बताया गया और मकान की मरम्मत के लिए पैसा दिया गया।

इस संस्था को 41 लाख

बुहाती देवी जन कल्याण एवं गौ सम्मान फाउंडेशन, ग्राम नवादा कोह, पाली, फरीदाबाद को बतौर सीपीएस सीमा त्रिखा ने ट्रैक्टर, ट्राली, सीवर सफाई मशीन, जेसीबी मशीन, एनआईटी फरीदाबाद इलाके की गायों के लिए चारा खरीदने के लिए 41 लाख रुपये की सरकारी ग्रांट 10 जनवरी 2018 को दी गई। इस संगठन को यह पैसा इस बात के लिए भी दिया गया था कि यह घर-घर से मुफ्त में कूड़ा उठाएगा। एनआईटी की जनता से अपील है कि अगर इस नाम की कोई संस्था आपके घर से मुफ्त कूड़ा उठा रही है तो मजदूर मोर्चा को बताएं ताकि इस संस्था को महान संस्थाओं की श्रेणी में डाला जा सके।

21 लाख पाने वाले भी हैं

फरीदाबाद में पत्रकारों के एक गुट द्वारा संचालित सिटी प्रेस क्लब ने सीमा त्रिखा को मुख्य अतिथि के तौर पर बुलाया था। यहां पर सीमा त्रिखा ने सिटी प्रेस क्लब को 21 लाख रुपये लाइब्रेरी विकसित करने और किताबें वगैरह खरीदने के लिए दिए थे, ताकि पत्रकार किताबें पढ़कर ज्ञान वगैरह हासिल कर सकें। लेकिन सिटी प्रेस

शेष पेज 5 पर

फर्जी एस्टीमेट का दोषी एक्सईएन बना एसई

एमसीएफ कमिश्नर ने लिखा था सजा के लिए, एस.एन. रॉय ने दिया इनाम

हरियाणा शहरी निकाय विभाग के दफ्तर में हर काम का रेट तय है

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: नगर निगम फरीदाबाद (एमसीएफ) के जिस इंजीनियर पर भ्रष्टाचार के आरोप थे, निगम कमिश्नर द्वारा कार्रवाई की सिफारिश के बावजूद उसे हरियाणा सरकार ने प्रमोशन देकर गुड़गांव नगर निगम में तैनात कर दिया। हरियाणा शहरी निकाय विभाग के चंडीगढ़ में बैठे अफसर किस तरह नगर निगमों में भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं, यह घटनाक्रम उसका जीता जागता उदाहरण है। फरीदाबाद और गुड़गांव नगर निगमों में तैनाती के लिए, जांच दबाने के लिए, जांच कराने के लिए चंडीगढ़ में बैठे अफसरों के दलाल सक्रिय हैं जो इस पूरे तंत्र को संचालित कर रहे हैं।

फर्जी एस्टीमेट की जांच

मामला इंजीनियरिंग ब्रांच का है। शहर के वॉर्ड 5 में सीवर और नालों की सफाई के लिए एस्टीमेट बनाना था। 8-10 लाख के काम का एस्टीमेट 40 लाख का बनाकर भेजा गया। 26 अप्रैल 2021 को सीवर लाइनों की सफाई के लिए तीन टेंडर जारी किए गए। इसमें दो एस्टीमेट फर्जी थे। करीब 36 इंच वाली सीवर लाइन की 865 मीटर लंबाई को कागजों में 1615 मीटर दिखाया गया। इसे इस तरह और आसानी से समझें -

एक टेंडर गुरूद्वारा रोड से मनीराम डिस्पोजल जिसकी लंबाई 90 मीटर और दूसरा टेंडर गुरूद्वारा रोड से पुराने डिस्पोजल तक जिसकी कुल लंबाई 650 मीटर है। एक और टेंडर कुंज गली का है, जिसकी कुल लंबाई 410 मीटर है। कुल मिलाकर जिस सीवर लाइन की लंबाई 865 मीटर है उसे नगर निगम ने तीन अलग अलग टेंडर में मिलाकर 1615 मीटर कर दिया है। जबकि 36 इंची लाइन की कुल लंबाई इतनी नहीं है।

इस मामले की शिकायत पर्वतीया कॉलोनी के राम सिंह ने नगर निगम कमिश्नर गरिमा मित्तल से की। उन्होंने इसकी जांच ज्वाइंट कमिश्नर को सौंपी। ज्वाइंट कमिश्नर ने जांच में पाया कि फर्जी एस्टीमेट बनाने में जेई, एसडीओ और एक्सईएन (कार्यकारी अभियंता) विवेक गिल जिम्मेदार हैं। जांच अधिकारी ने जेई संदीप को बर्खास्त करने और एसडीओ अमित चौधरी व कार्यकारी अभियंता विवेक गिल को कारण बताओ नोटिस जारी करने की सिफारिश की।

जांच रिपोर्ट आते ही कमिश्नर गरिमा

अनिल विज : मै हूं गब्बर

गरिमा मित्तल : ईमानदारी की फजीहत

एसएन रॉय : भ्रष्टाचारी को ईनाम

मित्तल ने जेई को बर्खास्त कर दिया क्योंकि वह ठेकेदारी में था। लेकिन कार्यकारी अभियंता विवेक गिल और एसडीओ के खिलाफ कार्रवाई के लिए उन्होंने शहरी निकाय विभाग के अतिरिक्त प्रधान सचिव एस.एन. रॉय को लिखा।

शेष पेज 5 पर